हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा

डॉ० अनुरुद्ध सिंह
हिन्दी विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय

हिन्दी प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष
हिन्दी साहित्य का इतिहास

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का वास्तविक सूत्रपात 19 वीं शताब्दी से माना जाता है। लेकिन मध्यकाल में रचित वार्ता साहित्य जैसे- चौरासी वैष्णवन की वार्ता, दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, भक्तमाल आदि में अनेक कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय मिल जाता है, लेकिन इतिहास लेखन के लिये जो कालक्रमानुसार वर्णन अपेक्षित होता है, उसका नितांत अभाव इन वार्ता ग्रंथों में है, अतः इन्हें साहित्य का इतिहास का इतिहास ग्रन्थ नहीं माना जा सकता। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों में जो उल्लेखनीय है, उनका संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है -

1- गार्सा-द-तासी - इन्होंने ही इतिहास लेखन की परम्परा का सूत्रपात किया। फ्रेंच विद्वान 'गार्सा-द-तासी' द्वारा रचित 'इस्तवार द ला लितरेत्यूर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी' जिसकी रचना दो भागों में की गयी प्रथम भाग का प्रकाशन सन् 1839 ई० में द्वितीय भाग का प्रकाशन सन् 1847 ई० में। इस ग्रंथ में हिन्दी और उर्दू के अनेक कवियों का विवरण वर्णानुक्रम से प्रस्तुत किया गया है।

2- शिव सिंह सेंगर - इतिहास लेखन की परम्परा में दूसरी महत्वपूर्ण कृति 'शिव सिंह सरोज' है। जिसकी रचना सन् 1883 ई० में की गई। इसमें लगभग एक हजार छोटे-बड़े कवियों का जीवन-चरित, उनकी साहित्यिक कृतियों एवं कविता के उदाहरण दिये गये हैं।

3- सर जॉर्ज ग्रियर्सन - ने सन् 1888 ई० में 'द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिंदुस्तान' नामक ग्रंथ का प्रकाशन एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की पत्रिका के विशेषांक के रूप में करवाया। ग्रियर्सन ने ही सबसे पहले अपने इस इतिहास में भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि बताते हुए इसे हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग माना।

④ मिश्र बन्धु - साहित्य के इतिहास ग्रंथों में मिश्र बंधुओं द्वारा रचित 'मिश्र बन्धु विनोद' का महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी रचना चार भागों में की गयी है। प्रथम तीन भाग सन् 1913 ई० में प्रकाशित तथा चौथा भाग सन् 1914 ई० में। मिश्र बंधु ने अपने ग्रंथ में लगभग 5000 कवियों का विवरण दिया।

Scanned with CamScanner

5- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों में रामचन्द्र शुक्ल का नाम सर्वोपरि है। शुक्ल ने सन् 1929 ई० में 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' नामक ग्रन्थ हिन्दी शब्द सागर की भूमिका के रूप में लिखा जिसे बाद में स्वतंत्र पुस्तक का रूप दिया गया। उन्होंने हिन्दी साहित्य के 900 वर्षों के इतिहास को चार कालों में विभक्त कर नया नामकरण भी किया -

1- आदिकाल - (वीरगाथा काल - 993 ई० - 1318 ई०)
2- पूर्व मध्यकाल - (भक्तिकाल - 1318 ई० - 1643 ई०)
3- उत्तर मध्यकाल - (रीतिकाल 1643 ई० - 1843 ई०)
4- आधुनिककाल - (गद्यकाल - 1843 ई० - 1927 ई०)

वस्तुतः शुक्ल जी ने हिन्दी साहित्य के इतिहास की रचना करके एक मानदण्ड प्रस्तुत किया। उन्होंने जो प्रवृत्तिमूलक इतिहास प्रस्तुत किया, उसमें कवियों के जीवन परिचय को उतना महत्व नहीं दिया जितना उनकी रचनाओं के मूल्यांकन को। यही नहीं उन्होंने कवियों के साहित्यिक महत्व को पहचानने के उपरांत ही उन्हें इतिहास में स्थान दिया, इसीलिये यह सम्भव हो सका कि वे मिश्र बंधु के पांच हजार कवियों की तुलना में केवल 1000 कवियों तक सीमित रह गये।

6- डॉ० राम कुमार वर्मा - इन्होंने हिन्दी साहित्य के इतिहास को दो भागों में प्रकाशित करने की योजना को क्रियान्वित करने का भी प्रयास किया है। इनमें से एक भाग 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' सन् 1938 ई० में प्रकाशन किया।

7- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी - अब तक साहित्य के इतिहास से सम्बंधित उनकी निम्न पुस्तकें प्रकाशन में आई -

1- हिन्दी साहित्य की भूमिका
2- हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास
3- हिन्दी साहित्य का आदिकाल

8- हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास (सम्पादित) - नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा 16 खण्डों में हिन्दी साहित्य के बृहत् इतिहास को प्रकाशित करने की योजना बनाई गई थी जिसका सम्पादन हो चुका है।

9- डॉ० गणपति चंद्र गुप्त - इन्होंने 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' (1965 ई०) लिखकर एक अभाव की पूर्ति की है। इस ग्रंथ में साहित्येतिहास के विकासवादी सिद्धांतों की प्रतिष्ठा करते हुये उसके आलोक में हिन्दी साहित्य की नूतन व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

Scanned with CamScanner